अध्यापक जांच सत्रीय कार्य
ई.एच.आई.-02
भारत : प्राचीनकाल से आठवीं शताब्दी ईसवी तक

पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.आई.-02
सत्रीय कार्य कोड : ई.एच.आई.-02/ए.एस.टी./टी.एम.ए./2026-2027
पूर्णांक : 100

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न के निर्धारित अंक प्रश्न के सामने लिखें हैं।

भाग 1: प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1) हड़प्पा सभ्यता के नगर नियोजन की प्रमुख विशेषताओं पर चर्चा कीजिए। **20**

अथवा

ऋग्वैदिक कालीन सामाजिक व राजनीतिक दशा का वर्णन कीजिए।

2) बौद्ध धर्म के उदय एवं प्रसार के कारणों की व्याख्या कीजिए। **20**

अथवा

मौर्यों के केन्द्रिय प्रशासन का वर्णन कीजिए।

भाग 2: प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए।

3) भारत की नवपाषाण संस्कृति पर चर्चा कीजिए। **12**

अथवा

200 ई.पू. से 305 ई. के दौरान मूर्तिकला की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

4) सोलह महाजनपदों पर चर्चा कीजिए। **12**

अथवा

प्रारम्भिक काल में तमिलाहम में राज्य के स्वरूप की व्याख्या कीजिए।

5) गुप्त शासकों के अधीन समाज व धर्म पर टिप्पणी लिखिए। **12**

अथवा

छठी शताब्दी ई. के मध्य से दसवी शताब्दी ई. तक दक्खन तथा दक्षिण भारत में हुई राजनैतिक गतिविधियों की विवेचना कीजिए।

6) शुंग एवं कुषाणों पर विस्तृत लेख लिखिए। **12**

अथवा

मगध के उदय के कारणों का स्पष्ट कोजिए।

भाग 3: प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए।

7. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए : **6+6**

(i) पश्चिमी मध्य तथा पूर्वी भारत की ताम्र पाषाण संस्कृति
(ii) जैन धर्म के सिद्धान्त व शिक्षाऐं
(iii) मौर्य कला
(iv) उत्तर गुप्तकाल में धर्म के क्षेत्र में हुई गतिविधियाँ।

1) हड़प्पा सभ्यता के नगर नियोजन की प्रमुख विशेषताओं पर चर्चा कीजिए। (20)

अथवा

ऋग्वैदिक कालीन सामाजिक व राजनीतिक दशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर

हड़प्पा अथवा सिंधु सभ्यता भारतीय उपमहाद्वीप की प्रारम्भिक नगरीय सभ्यताओं में प्रमुख है। इसका परिपक्व चरण सामान्यत: लगभग 2600 से 1900 ईसा पूर्व के बीच माना जाता है। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धौलावीरा, कालीबंगा, लोथल और राखीगढ़ी जैसे स्थलों से प्राप्त अवशेषों से पता चलता है कि नगरों का निर्माण योजनाबद्ध ढंग से किया गया था। हालांकि सभी नगर आकार और विन्यास में एक समान नहीं थे, फिर भी निर्माण-प्रणाली, जल-निकास और सार्वजनिक सुविधाओं में उल्लेखनीय सामंजस्य मिलता है। नगर नियोजन से इस सभ्यता के तकनीकी कौशल, सामूहिक श्रम और संगठित नगरीय जीवन का ज्ञान होता है।

नगरीय विन्यास और सड़कों की व्यवस्था

कई बड़े हड़प्पाई नगरों में ऊँचे तथा अपेक्षाकृत नीचे बसे क्षेत्रों का अंतर दिखाई देता है। ऊँचे भाग को प्राय: दुर्ग-क्षेत्र तथा दूसरे भाग को निचला नगर कहा जाता है। मोहनजोदड़ो में ये क्षेत्र स्पष्ट हैं; परंतु प्रत्येक स्थल पर इसी प्रकार का विभाजन मान लेना उचित नहीं है। नगरों में मुख्य सड़कें तथा उनसे जुड़ी गलियाँ नियोजित रूप में बनाई गई थीं। अनेक स्थानों पर सड़कें लगभग समकोण पर एक-दूसरे को काटती हैं। इससे आवागमन और आवासीय खंडों की व्यवस्था आसान हुई होगी। सड़क की चौड़ाई और दिशा स्थान विशेष के अनुसार बदलती थी। कालीबंगा में भी सुव्यवस्थित गलियों तथा अलग-अलग आवासीय खंडों के प्रमाण मिले हैं। धौलावीरा का विशिष्ट तीन-भागीय नियोजन इस बात का उदाहरण है कि नगर-रचना में क्षेत्रीय प्रयोग भी किए जाते थे।

भवन-निर्माण और मानकीकृत ईंटें

हड़प्पाई नगरों में कच्ची तथा पकी ईंटों का व्यापक प्रयोग मिलता है। अनेक स्थलों पर ईंटों के माप में लगभग 1:2:4 का अनुपात दिखाई देता है, जो मानकीकरण की प्रवृत्ति दर्शाता है। घरों में कमरों, आँगनों, स्नान-स्थानों और कुछ जगह सीढ़ियों की व्यवस्था थी। अधिकांश मकानों का प्रवेश मुख्य